चेतना विकास मूल्य शिक्षा

कक्षा – 1

संरक्षण एवं मार्गदर्शन

ए. नागराज
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद)

लेखन
साधन भट्‌टाचार्य
श्री राम नरसिम्हन
कुमार संभव, सोम त्यागी
बी.आर. अग्रवाल, अंजनी कुमार
श्रीमती सुवर्णा योगेश

प्राक्कथन

मानवीय शिक्षा का प्राक्कथन एक आवश्यकता के रूप में हमें महसूस हुआ, क्योंकि यह पाठ्यपुस्तिका का उपक्रम पहली कक्षा से प्रस्तुत किया गया है। क्रम से परंपरागत होने तक सिलसिला बना ही रहेगा। सह अस्तित्व अपने स्वरूप में व्यापक वस्तु में ही सम्पूर्ण एक–एक वस्तु जैसा परमाणु, अणु, ग्रह, गोल, सौर व्यूह, आकाश गंगा। डूबी, भीगी, घिरी होने के आधार पर नियंत्रण, क्रियाशीलता और उर्जा सम्पन्नता प्रत्येक वस्तु में नित्य प्रमाण के रूप में देखा गया है। साथ में यह भी समझा गया है कि व्यापक वस्तु में समाहित सम्पूर्ण एक–एक वस्तुओं की अविभाज्यता नित्य वर्तमान है। यही सह–अस्तित्ववादी विश्व–दृश्टिकोण का मूल रूप है। ऐसे सह अस्तित्व नित्य प्रभावी रहना स्वाभाविक है।

सह अस्तित्व को ध्यान में रखते हुए प्रथम कक्षा से अर्थात् अक्षराभ्यास से चलकर शब्दों का अभ्यास और शब्दों के अभ्यास से अर्थ का अभ्यास, अर्थों के अभ्यास के तात्पर्य में हर शब्द किसी वस्तु का, क्रिया का अथवा फल–परिणाम का नाम है। ऐसा अर्थ इंगित होना ही शब्द से अर्थ समझा गया है इसलिए अर्थबोध करने के उपक्रम में शिक्षा विधा को अध्ययन के रूप में प्रस्तुत करने का सौभाग्य प्रस्तुत हुआ। यह पठन विधि से अर्थ बोध तक पहुंचने का मार्ग प्रशस्त हुआ। इसे प्रस्तावित करना इसलिए आवश्यक समझा गया कि मानव सह–अस्तित्व विधि से ही समुदाय चेतना से मानव चेतना में संतुलित होना है। मानव चेतना का प्रयोजन, समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व पूर्वक जीने का प्रमाण है। इससे अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था की पहचान होना स्वाभाविक है।

यह तो सटीक है कि विगत विधि से जो पाठ–पठन का लक्ष्य था, उसे आगे पढ़ाने के जिन भी उपायों को खोजा गया है, वह सब सार्थक है, मूलतः मानवीय शिक्षा के अभाव वश सामुदायिकता, मतभेद, साम, दाम, दण्ड, भेद, परस्पर समुदायों की निहित अतिशोधों का विश्वास प्रयोग हो चुका है। इन सब अभिशापों से मुक्ति पाने की अकांक्षा मानव में निहित होना भी पाया गया। इसलिए मानवीय शिक्षा का निश्चयीकरण आवश्यक समझा गया है। इसे क्रियान्वयन करने की क्रमविधि से प्रस्तुत किया। मानवीय शिक्षा में मानव का अध्ययन प्रधान उद्देश्य को सार्थक बनाने के क्रम में प्रथम कक्षा से ही सूत्रपात रूप में मूल्य संबंधी और शरीर के अवयव संबंधी शब्दों का अधिकतम चयन किया गया है। साथ में परस्पर मानव संबंधों से संबंधित शब्दों का चयन किया गया है। इसे हर बालक अथवा किशोर आसानी से पहचान पायेगा। ऐसी हमारी स्वीकृति है। यह सार्थक और सफल होना पाया गया है। भविश्य में मूल्यांकन होता रहेगा। इस विधि से सर्व शुभ होने की कामना है।

ए. नागराज
प्रणेता
मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद)
श्री नर्मदाचंद, भजनाश्रम, अमरकंटक
जिला अनूपपुर (मध्यप्रदेश)

भूमिका

विज्ञान शिक्षा से छात्र–छात्राओं एवं युवाओं में तर्क शक्ति का अभूतपूर्व विकास हुआ है। जिससे आस्था (बिना जाने मान लेना) की प्रवृत्ति में कमी आई है। अतः परंपरागत शैली जिसमें यह करो, यह न करो अथवा ''ऐसा जीना चाहिए'' आदि उपदेश विद्यार्थियों में अब प्रभावशाली सिद्ध नहीं हो पा रहे हैं। ऐसे में परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी शिक्षा के सार्वभौम स्वरूप पर चिंतन की आवष्यकता है।

यूनेस्को .... द्वारा अपेक्षित शिक्षा के चार स्तम्भों में मुख्य स्तम्भ .... अर्थात् ''साथ–साथ जीना सीखना'' पर जोर दिया है।

मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने मानव मूल्य शिक्षा हेतु निम्न मार्गदर्शन दिया है –

1. पाठ्यक्रम किसी भी प्रकार के अंधविष्वास, कर्मकाण्ड व पूजन पद्धति से मुक्त हो।
2. पाठ्यक्रम रहस्यवाद, सम्प्रदायवाद व व्यक्तिवाद से मुक्त हो।
3. पाठ्यक्रम ''करो न करो'' आदि उपदेश न होकर तर्कपूर्ण हो, तर्कपूर्ण ढंग से इसका प्रयोग एवं विश्लेषण द्वारा परीक्षण कर सकते हो।
4. पाठ्यक्रम को आचरण में प्रमाणित किया जा सकता हो।
5. पाठ्यक्रम दर्शन आधारित हो।

आधुनिक शिक्षा को रोजगारोन्मुखी ही नहीं बल्कि परिवारोन्मुखी, समाजोन्मुखी भी होने की आवश्यकता है, ताकि हर परिवार समाधान, समृद्धिपूर्वक जी सके। समाधान का अर्थ मानव संबंधों में परस्पर तृप्ति एवं प्रकृति के साथ संतुलनपूर्वक जीना है। समृद्धि अर्थात् अभाव–मुक्त जीना इस आशा की पूर्ति के लिए मानवीय मूल्यों के शिक्षक की आवश्यकता महसूस की जाती रही है।

मध्यस्थ दर्शन (सह–अस्तित्ववाद) उपरोक्त सभी कटौतियों को पूरा करता है, जिसका परिचय ''जीवन विद्या शिविरों'' के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। मध्यस्थ दर्शन से विस्तृत चेतना विकास मूल्य शिक्षा मानव में पाँच सद्गुणों को सुनिश्चित करती है :–

1. स्वयं में विश्वास
2. श्रेष्ठता का सम्मान
3. प्रतिभा एवं व्यक्तित्व में संतुलन
4. व्यवसाय में स्वालंबन
5. व्यवहार में सामाजिकता

आज धरती एक गाँव .... हो गयी है। अतः विश्व शांति हेतु वैश्विक नागरिक .... अर्थात् सार्वभौम मानवीय आचरण को पहचानने की आवश्यकता है। चेतना विकास मूल्य षिक्षा के प्रकाष में सार्वभौम मानवीय आचरण, सार्वभौम मानवीय शिक्षा, सार्वभौम मानवीय व्यवस्था, सार्वभौम मानवीय संविधान का व्यावहारिक स्वरूप व्याख्यायित होता है। साथ ही ''मानव में समानता'' व धर्म निरपेक्षता का व्यावहारिक स्वरूप प्रकट होता है जिससे ''मानव जाति एक, मानव धर्म एक'' पूर्वक जीने की राह प्रषस्त होती है।

विश्व के इतिहास में शायद पहली बार हुआ है कि संपूर्ण दर्शन को प्राथमिक शिक्षा के स्तर पर पहुंचाया गया हो। राज्य शासन ने कक्षा 10 वीं तक अध्ययन करने वाले सभी बच्चों को सहअस्तित्व का महत्व इस दर्शन के माध्यम से सिखाने का निर्णय लिया है। यह पुस्तक इसी प्रयास का एक भाग है। हम आशा करते हैं कि शिक्षक स्वविवेक के साथ इस पुस्तक का उपयोग करके इस महती उद्देश्य की पूर्ति करेंगे। जाहिर है आपके सुझावों का हमें हमेशा इंतजार रहेगा।

नंद कुमार (भा.प्र.से.)
संचालक

लेखकीय

प्रत्येक शिशु जन्म से ही न्यायापेक्षी, सही कार्य–व्यवहार करने वाला एवं सत्य वक्ता होता है, परन्तु न्याय, सही कार्य–व्यवहार एवं सत्य से शिशु अनभिज्ञ रहता है। इन्हें समझने के लिए वह परम्परा पर, मुख्यतः शिक्षा परम्परा पर आश्रित रहता है। इस हेतु आज्ञापालन, अनुसरण, अनुकरण एवं जिज्ञासा सम्पन्न रहता है।

प्राथमिक कक्षा में प्रवेश के पूर्व ही सभी शिशु अपनी मातृभाषा को समझने व बोलने की योग्यता से सम्पन्न होते हैं एवं अपने परिवेश के प्रायः सभी कार्य–व्यवहार व वस्तुओं को पहचानते हैं। अपने परिवेश के अनुसार मान्यता व विचार संपन्न रहते है।

विद्यालय में प्रवेश के साथ शिक्षा में अक्षर, शब्दों एवं अंको को पहचानने व लिखने का कार्य शिक्षा की प्रमुख वस्तु होती है जबकि सभी विद्यार्थी अनेक वाक्यों को बोलने, अनेक वाक्य बनाने में समर्थ रहते हैं। उनकी इस पूर्व योग्यता को बढ़ाने के लिए शिक्षा में स्पश्ट कार्यक्रम का अत्याभाव है। फलतः शिक्षा में पर्याप्त रूचि नहीं बनती। इसी के साथ प्राथमिक स्तर पर स्वयं पढ़कर समझने–सीखने की योग्यता अधिकांश विद्यार्थियों में विकसित नहीं होती है और वे अधिकांशतः शिक्षक पर ही आश्रित रहते हैं। इसे पूरा करना ही शिक्षक की सार्थकता है।

अस्तु विद्यार्थियों की योग्यता के अनुसार मानवीय चेतना विकसित करने हेतु एवं शिक्षकों की सार्थकता प्रमाणित होने के उद्देश्य से 'चेतना विकास मूल्य शिक्षा' के पाठ्यपुस्तकों को लिखा गया है।

हमें विश्वास है यह पुस्तक इन अर्थों को प्राप्त करने में सफल होगा।

चेतना विकास मूल्य शिक्षा की पुस्तक प्रथम बार लिखी गई है अतः इसमें सुधार की अपार सम्भावनाएँ हैं। विद्वान अध्यापकगणों से इस हेतु सतत् मार्गदर्शन की अपेक्षा है।

लेखकगण

प्रथम संस्करण की भूमिका

चेतना विकास मूल्य शिक्षा पर कक्षा 1 से 5 तक पुस्तक 2009 में लिखी गई।

प्रथम बार पुस्तक लिखने तथा अल्प समय में इसे पूरा करने के कारण व्याकरण संबंधी एवं टंकण संबंधी भूल भी रही। कक्षा 1 से सभी पाठ कविता में हैं एवं कविता में तुकबंदी का अभाव था।

प्रथम संस्करण में शिक्षा की वस्तु को यथावत रखते हुये व्याकरण में सुधार किया गया है एवं कविताओं में तुकबंदी पर थोड़ा ध्यान दिया गया है। कुछ तकनीकी से संबंधित पाठों को हटा दिया गया है।

हमें विश्वास है पुस्तक विद्यार्थियों के लिए सुबोध हेगा।

लेखकगण

अनुक्रमणिका

भाग	पाठ	नाम	पृ. संख्या
1) मानव लक्ष्य	पाठ 1	अम्मा	
	पाठ 2	आहार	
	पाठ 3	इच्छा	
	पाठ 4	ईक्षण	
	पाठ 5	उत्सव	
	पाठ 6	ऊष्मा	
	पाठ 7	ऋतु	
	पाठ 8	एक	
	पाठ 9	ऐक्य	
	पाठ 10	ओठ	
	पाठ 11	औषधि	
	पाठ 12	अंग	
	पाठ 13	अःस	
	पाठ 14	कक्षा	
	पाठ 15	खलिहान	
	पाठ 16	गगन	
	पाठ 17	हार	
	पाठ 18	चयन	
	पाठ 19	छवि	
	पाठ 20	जल	
	पाठ 21	झरना	
	पाठ 22	टहलना	
	पाठ 23	ठहरना	
	पाठ 24	डगर	
	पाठ 25	ढलना	
	पाठ 26	तरल	
	पाठ 27	थपकी	
	पाठ 28	दया	
	पाठ 29	धरती	

अनुक्रमणिका

भाग	पाठ	नाम	पृ. संख्या
	पाठ 30	नमन	
	पाठ 31	परिवार	
	पाठ 32	फल	
	पाठ 33	बहन–भाई	
	पाठ 34	भला	
	पाठ 35	मन	
	पाठ 36	यश	
	पाठ 37	रचना	
	पाठ 38	लक्ष्य	
	पाठ 39	वन्दना	
	पाठ 40	शरीर	
	पाठ 41	शटकोण	
	पाठ 42	समान	
	पाठ 43	हम	
	पाठ 44	क्षमता	
	पाठ 45	त्रय	
	पाठ 46	ज्ञान	
	पाठ 47	श्रम	

वंदना

वंदना उनकी करें, जिनसे सुशोभित है धरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनसे दिशा हमको मिली, नित मानवीय मार्ग की।
पथ मिला निश्चित हमें थी, कामना जिस मार्ग की।।
कृतज्ञता से सौम्यता की, नित्य आयी निरंतरा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

जिनका है चिन्तन शुभ यही, कैसे हो मानव सुखमयी।
प्रेरणा से जिनकी है, मानव का जीवन सुखमयी ।।
श्रद्धा समर्पित जिनसे आए, मानवीय परम्परा।
जिनसे है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

सबके सुख की कामना ले, रहती जिनकी कल्पना ।
निकली जिनसे मानवीय पथ, हेतु निश्चित योजना।।
पूज्यता उन हेतु जिनसे, है सुसज्जित वसुन्धरा ।
जिनमें है मानव का पथ, प्रकाश ज्योति से भरा।।

–प्रदीप पूरक, बिजनौर (उ.प्र.)

पाठ – 1

अम्मा

अम्मा मेरी अच्छी अम्मा
अम्मा मेरी प्यारी अम्मा।।
सुबह–सुबह मुझे जगाती
मलमलकर नहलाती अम्मा।।
नित भोजन मुझे कराती
शाला को भिजवाती अम्मा।।

खेल–खेल में मुझे पढ़ाती
सच–सच कह समझाती अम्मा।।
सभी कार्य मुझे सिखाती
सही राह दिखलाती अम्मा।।
अम्मा मेरी अच्छी अम्मा
अम्मा मेरी प्यारी अम्मा।।

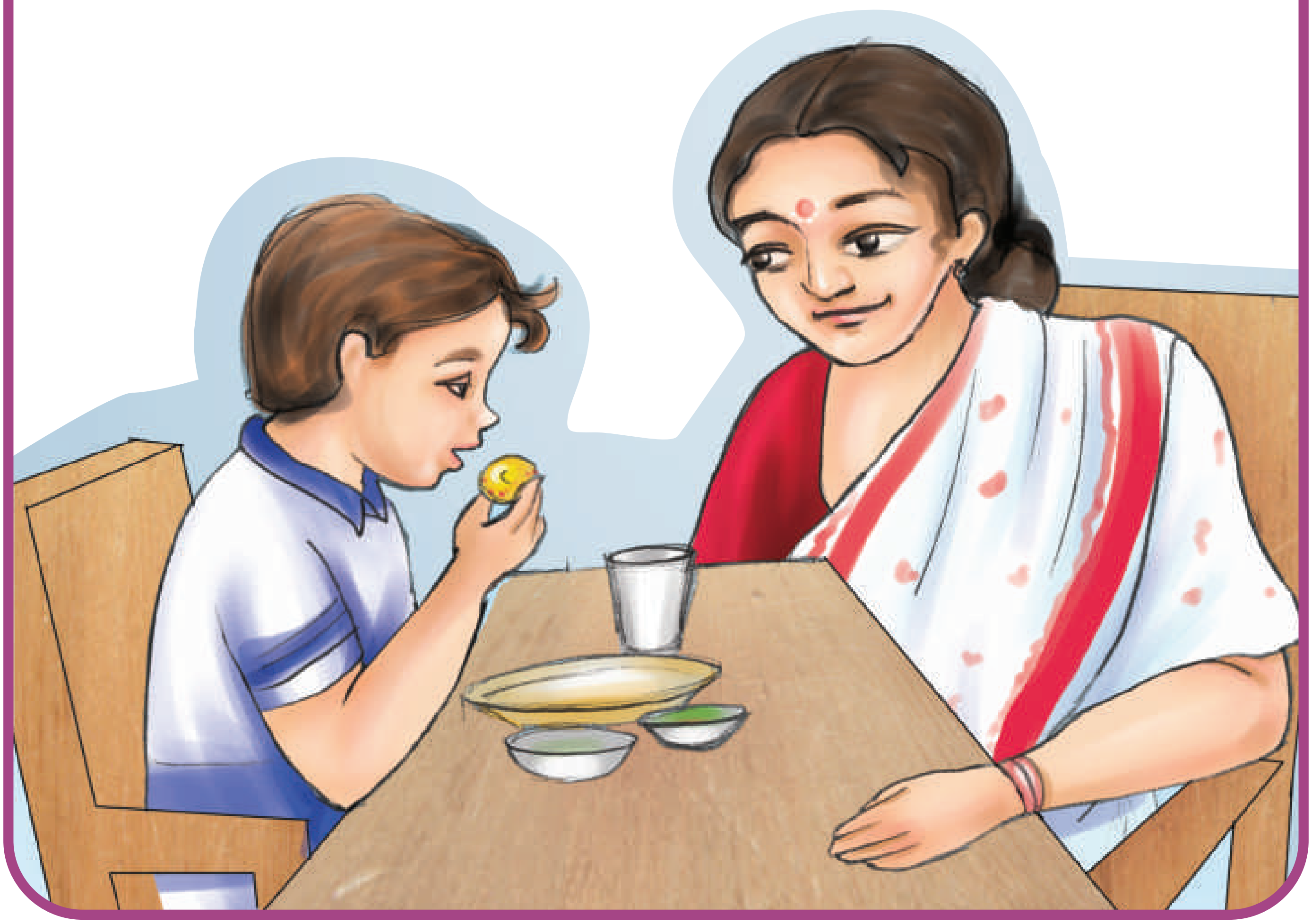

आहार

आहार है आहार है
पुष्टि इसका सार है
भूख लगे तो करें आहार
होते इसके अनेक प्रकार।
भात–रोटी शाक दाल
दूध–दही और मेवा फल।।
धरती का है यह उपहार
चबा–चबा कर करें आहार।
तन को मिलता इसका सार
तन से हम करते हैं उपकार।।
आहार है आहार है
पुष्टि इसका सार है।

इच्छा

पाठ – 3

इच्छा होती शाला जाऊँ
खूब पढ़ूँ सबके मन भाऊँ।
गुरूजनों की आज्ञा मानूँ
प्यार बड़ों से हरदम पाऊँ।।
मिलजुल खेलूँ संग सभी के
स्वस्थ रहूँ यह मेरी इच्छा।
सभी बड़ों की सेवा में
मगन रहूँ यह मेरी इच्छा।।

ईक्षण

पाठ – 4

सुखी होते हम तत्क्षण
होता है जब ईक्षण।
सत्य समझना हरक्षण
कहलाता है ईक्षण।।
ईक्षण से होता निश्चय
निश्चय में हम जीते।
साथ सभी रहते निर्भय
मिल–जुल कर जीते।।

पाठ – 5

उत्सव

शाला का हर दिन
खुशियाँ लाता है।
जन्मदिवस का उत्सव
हर वर्ष आता है।।
नामकरण का उत्सव
सबको भाता है।
हर देश काल में यह
होता जाता है।।

पाठ – 6

ऊष्मा

देखो बाल सूर्य की सुषमा
दिन भर यह देता ऊष्मा।
गर्मी में बचते इससे
शीत ऋतु में भाती ऊष्मा।।
पकते भोजन इससे
बड़े काम की होती ऊष्मा।।

पाठ – 7

ऋतु

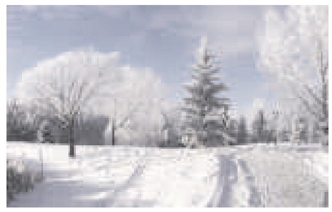

ठंडी गर्मी वर्षा
हर वर्ष आती जाती।

ठंडी गर्मी वर्षा
ऋतुएँ कहलाती।।

पाठ – 8

एक

सूरज एक चन्दा एक
धरती भी है एक।
इसमें रहते हम सब
मानव जाति एक।।
आदि एक है गिनती का
अन्त कभी न होता।
अंश एक यह धरती का
नाश कभी न होता।।

पाठ – 9

ऐक्य ऐक्य

ऐक्य हुई वर्षा की बूंदे
पोखर के जल में।

ऐक्य हुआ जल नदियों का
सागर के जल में।

ऐक्य हुए मन मानव के
समाधान के फल में।।

पाठ – 10

ओठ

तरल सभी हम इससे पीते
हँसने में सहयोगी ओठ।

भोजन भी हम इससे करते
मन की बोली बोले ओठ।।

औषधि

जब जब होती तन में व्याधि।
स्वस्थ बनाती इसे औषधि।।
आस–पास यह मिलती है।
धरती में यह पलती है।।
तुलसी अदरक जायफल।
करते तन को ये निर्मल।।

अंग

हाथ पैर आँख नाक
होते सब संग–संग।

कार्य करें इनसे अपने
कहलाते सब अंग।।

सुनते अंग से, चलते अंग से।
रहते हम सब, अच्छे ढंग से।।

पाठ – 13

अ:स

अ:स नाम है दिन का
प्रकाश भी कहलाए अ:स।

अ:स नाम ये ज्ञान का
दिखता जिससे वह है अ:स।।

कक्षा

पाठ – 14

जीने के ढंग गढ़ते हैं।
कक्षा में हम पढ़ते हैं।।

मिलके आगे बढ़ते हैं।
कक्षा में हम पढ़ते हैं।।

गुरूजी हमें पढ़ाते हैं।
जीवन ज्ञान सिखाते हैं।।

सबका ज्ञान बढ़ाते हैं।
सही राह दिखलाते हैं।।

पाठ – 15

खलिहान

पावन होते हैं खलिहान
फसल काटकर रखे किसान।

माड़े–मींजे कोदो धान
उत्तम खेती की पहचान।।

पाठ – 16

गगन

सूरज चाँद और तारे
सभी गगन में न्यारे–न्यारे।

साथ–साथ सदा ये रहते
साथ–साथ ये घुमा करते।।

ग्रह–गोलों से भरा गगन
दिखते भी है खूब सघन।

दूर–दूर फैला यह गगन
अवलोकन कर हुए मगन।।

घर

कहीं ईंट की कहीं फूस की
होते ये पक्के कच्चे।।

कैसी भी हो रचना इसकी
रहते बूढ़े – बच्चे।।

शीत उश्ण वर्शा से बचते
करते हैं आवास।।

घर में सोते घर में जगते
साथ – साथ ही वास।।

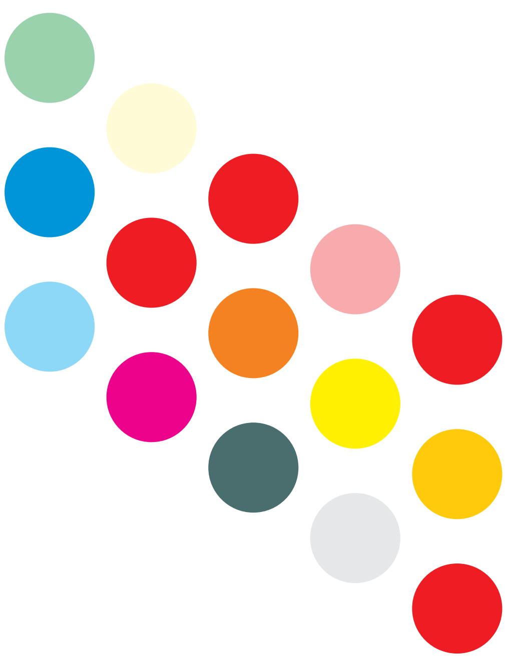

चयन

अपनी शक्ति को अब
हम सब जाने माने।
सदा–सदा चुनने की
ताकत को पहचाने।।
चयन कार्य को हर पल
आशा से ही करते।।
पास दूर की हर वस्तु
हम सब चुनते रहते।।

पाठ – 19

छवि

माता के मन में
बच्चों की छवि प्यारी।
गुरू के आँखों में
शिष्यों की छवि न्यारी।।

पाठ – 20

जल

वर्शा से जल आता है
सबकी प्यास बुझाता है।
फसलें उगती इससे
जीते जीव जल से।
पीते मानव इसको
पकता भोजन जल से।
करते इसमें स्नान
धुलते कपड़े जल से।
जल कई कार्य में सहयोगी
इसकी बूँद–बूँद उपयोगी।।

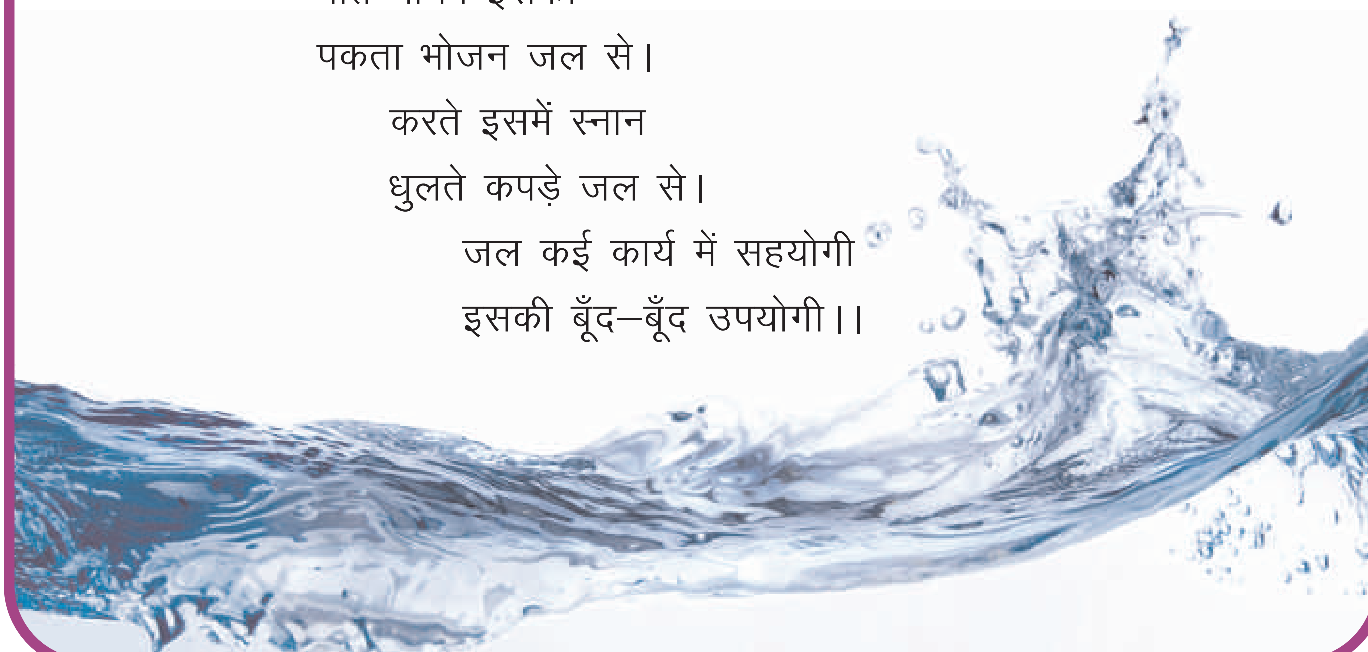

झरना

पर्वत से निकली निर्मल जल धारा।
झरना कहता इसको जग सारा।।

टहलना

प्रातः काल टहलने जाएँ
तन को हम स्वस्थ बनाएँ।

सबके लिए सरल व्यायाम
करते इसको सुबह–शाम।।

ठहरना

पाठ – 23

पक्षी ठहरे पेड़ों में
पानी ठहरे मेड़ों में।

ठहरे मानव घर में
ठहरे नदियाँ सागर में।।

डगर

पाठ – 24

डग भरकर चलें
शाला की डगर।

लक्ष्य तक पहुँचाती
ये यह डगर।।

पाठ – 25

ढलना

साँचे में बर्तन ढलता
बर्तन में ढलता पानी।
पश्चिम में सूरज ढलता
शाला में ढलता ज्ञानी।।

पाठ – 26

तरल

हर आकार में ढले तरल।

बहे ढाल की ओर तरल।।

तैरे जिसमें वह होता तरल।

जैसे दूध दही और रस जल।।

थपकी

रोने में भी देती थपकी
सोने में देती थपकी।
थपकी देकर मुझे जगाती
माता इससे मुझे सिखाती।।

पाठ – 28

दया

इससे पाते पोषण

मिलता है हर पल संरक्षण।

होता इससे शिक्षण

यह भाव दया का हर क्षण।।

पाठ – 29

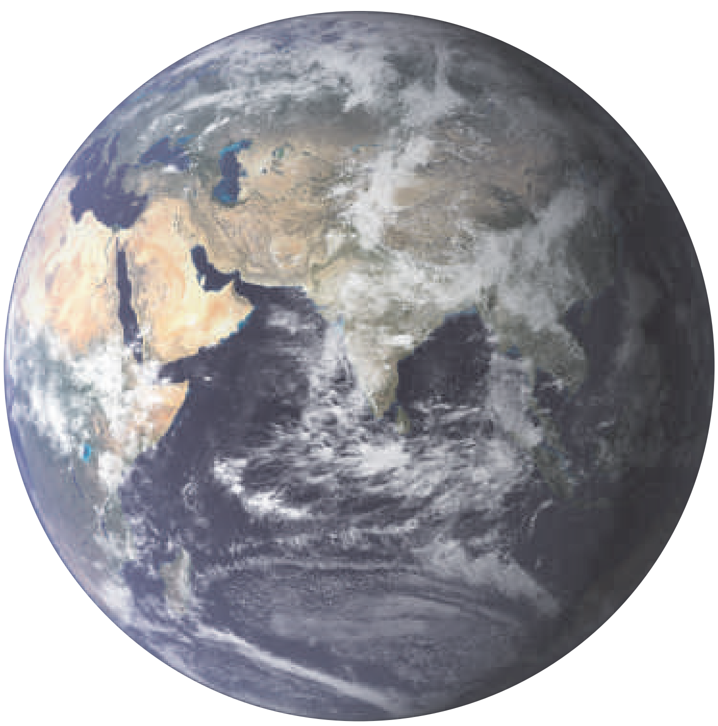

धरती

गोल है ये धरती।
एक है ये धरती।।
पानी वायु मिट्टी पत्थर
उगते पौधे सभी इस पर।
भूचर जलचर व नभचर
जीव सभी ये धरती पर।
पूरक होकर रहें परस्पर
खुश होते मानव धरती पर।।

पाठ – 30

नमन

राह दिखाई जिनने हम को
नित नित करूं मैं नमन।
शीश झुकाएँ हम उन्हें
कृतज्ञ रहे सदा मेरा मन।।

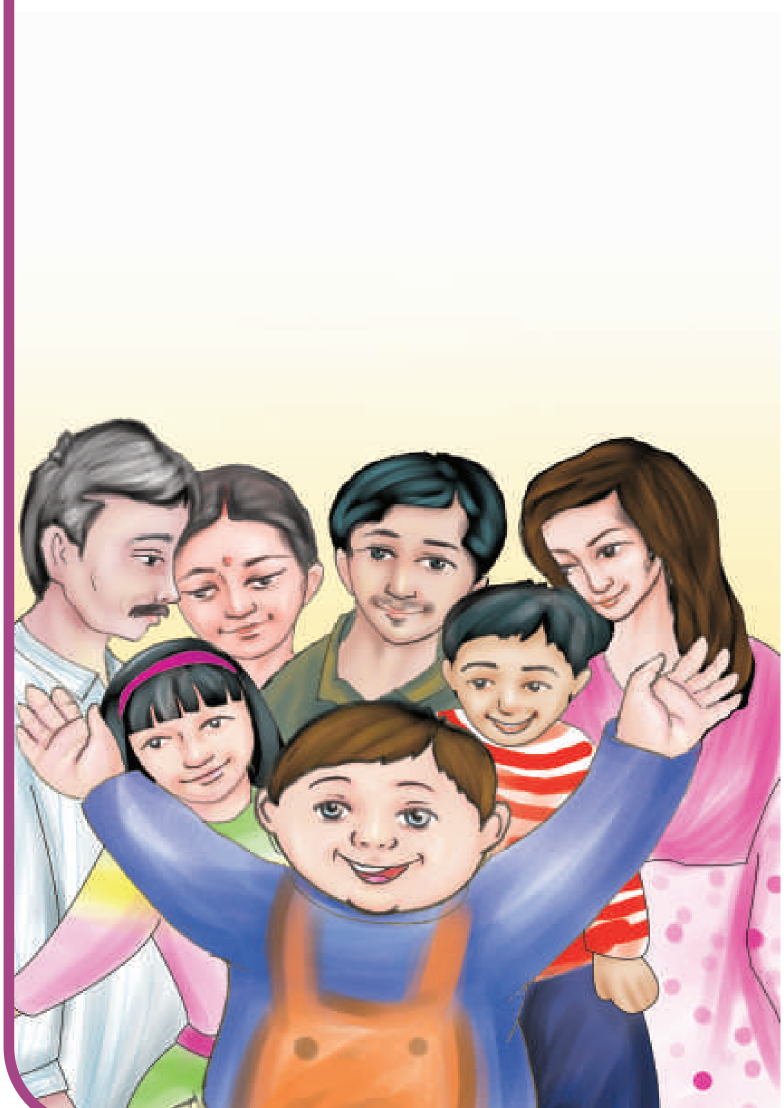

पाठ – 1

परिवार

परिवारों में हम सब रहते
साथ–साथ सब जीते।
साथ–साथ हम खाते पीते
साथ–साथ ही सोते।।

काकी काका दादी दादा
हमें सिखाते जीना साथ।
बहन भाई और माता पिता
कार्य हम सब करते साथ।।

पाठ – 32

फल

बादल का फल वर्शा जल।
फल जिसका होता फसल।।

जैसे छाया वृक्षों में फल।
खोदा कुआँ फल है जल।।

करता मानव कार्य सकल।
निश्चित होता जिसका फल।।

पाठ – 33

बहन–भाई

रहते हैं सब साथ–साथ।
कार्य करे सब साथ–साथ।।
मिलजुल कर करें पढ़ाई।
हम सब हैं बहन – भाई।।

पाठ – 34

भला

गुरूओं से लेकर दीक्षा।
शिशुओं को देता शिक्षा।।

वस्तु बनाता उपयोगी।
जीता बनके सहयोगी।।

करना सेवा भरसक जाना।
हरदम अच्छी बाते माना।।

भला काम ये पहचान।
सत पथ पर चलते जाना।।

पाठ – 35

मन

स्वादों को सब पहचाने।
अच्छी बातें मन से माने।।

यह मन बलशाली अक्षय
करता यह तन का सद् व्यय।

जन जीता होकर निर्भय
मानवता का है उदय।।

यश

कार्य भले हम करते हैं।
प्यार बड़े का पाते हैं।।

सीख छोटे पाते इससे।
यश ही यश पाते सबसे।।

रचना

बनी बनाई चीजों को
हम सब कहते हैं रचना।
बनी है धरती अपनी
एक निराली रचना।।
जिस विद्यालय में हम पढ़े
ये है मानव की रचना।।
मानव करते हैं नित–नित
कई नई–नई रचना।।

पाठ – 38

लक्ष्य

लक्ष्य हमारा है समझना
सब बाते अच्छी सीखना।।
लक्ष्य हमारा अच्छा बोलें
साथ–साथ ही जीना।।

पाठ – 39

वन्दना

गुरूजनों की करें वन्दना
नित–नित इनसे पाते ज्ञान।

मा–पिता की करें वन्दना
सदा इसमें है पहचान।।

अच्छे–अच्छे कार्य करे नित
शत–शत उनका वन्दन

सहयोगी सब जन के
उनको है अभिनन्दन

पाठ – 40

शरीर

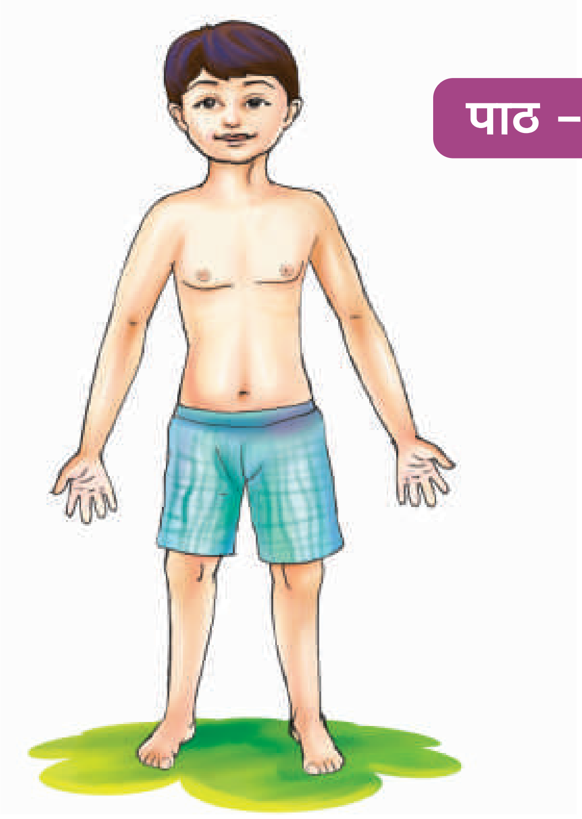

शरीर एक निराली रचना
कहते हैं इसको मानव तन।
अंग अवयव है इसमें समाए
संचालित करता जिसको मन।।

पाठ – 41

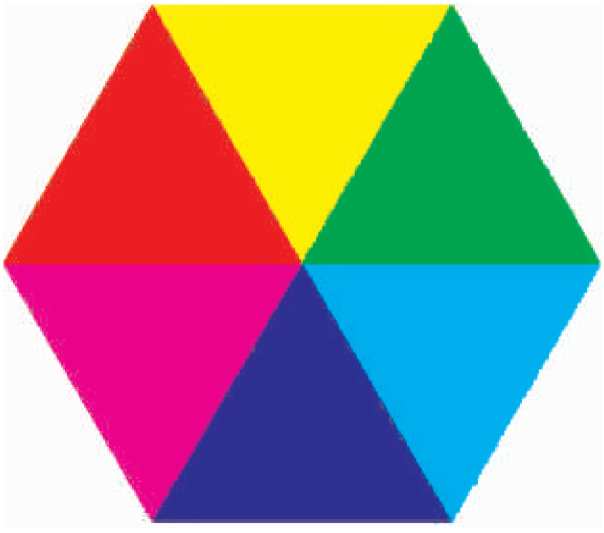

षटकोण

रेखाओं से बने कोने
कोने कहलाते कोण।

छः रेखा और छः कोन
कहलाते ये शटकोण।।

पाठ – 42

समान

हम सब मानव हैं समान।
सबकी रचना है समान।।

अंग सभी के हैं समान।
लक्ष्य सभी के हैं समान।।

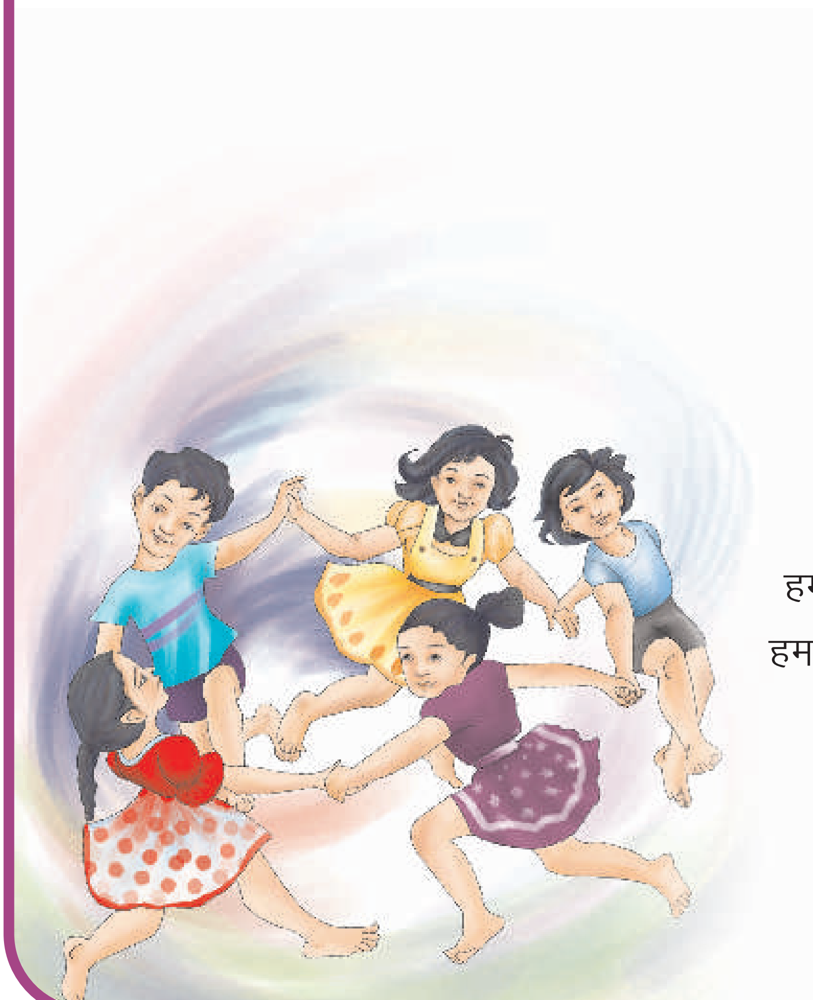

पाठ – 43

हम

हम साथ साथ हैं रहते।
हम साथ साथ ही जीते।।

पाठ - 44

क्षमता

हर पल रहती है क्षमता।
हम मानव में ये क्षमता।।
सीखे समझे ऐसी क्षमता।
पढ़ते लिखते ऐसी क्षमता।।

पाठ - 45

त्रय

त्रय का अर्थ होता तीन
तिराहे में है राहें तीन।
त्रिभुज में जैसे भुजा तीन
पलाश में वैसे पत्ते तीन।।

पाठ – 46

ज्ञान

परिवार में मिलता ज्ञान
शाला में भी पाते ज्ञान।
गुरूजनों से मिलता ज्ञान
ज्ञान से होता है कल्याण।।

पाठ – 47

श्रम

सेवा करते हैं इससे
खेती करते हैं श्रम से।
खेलकूद होते इससे
कार्य सब होते श्रम से।।